आंबेडकर पथ I वर्ष: 1 I अंक : 01 I जनवरी-जून 2024 I ISSN : 3048-7781

डॉ. भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचार

–अभिषेक कुमार प्रजापति*
–धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ**

डॉ. आंबेडकर ने अपने शैक्षिक विचारों को अपने भाषणों, समाचार-पत्र के लेखों, निबंधों, साक्षात्कारों, साहित्यिक कार्यों और आंदोलनों के माध्यम से व्यक्त किया। अपने जीवनकाल के दौरान डॉ. आंबेडकर के विचार जनता के जीवन, विशेषकर हाशिये पर पड़े लोगों के जीवन को बदलने के लिए महत्त्वपूर्ण थे। बाबासाहेब के शैक्षिक विचारों मे गौतम बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और अन्य समकालीन सामाजिक क्रांतिकारियों सहित जान डीवी जैसे प्रख्यात प्रयोजनवादी शिक्षाविदों का प्रभाव दिखायी पड़ता है। महात्मा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले के दलितों और विशेषकर महिलाओं को शिक्षित करने के उत्साह ने आंबेडकर को बहुत प्रेरित किया। आंबेडकर शिक्षा के क्षेत्रों में प्रयोगात्मक दृष्टिकोण, लोकतंत्र और वैज्ञानिक पद्धति की व्यावहारिकता पर महान् प्रयोजनवादी जॉन डीवी के विचारों से भी बहुत प्रभावित थे। आंबेडकर ने आम जनता की शैक्षिक उन्नति की समस्या को हल करने के लिए बहुत तार्किक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। आंबेडकर का मानना था कि भोजन, कपड़ा, मकान और स्वास्थ्य के साथ-साथ शिक्षा भी बुनियादी जरूरतों में से एक है। अतः उन्होंने स्वतंत्र भारत के सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के शैक्षिक अधिकारों की गारंटी देने की महत्त्वपूर्ण पहल की थी। डॉ. आंबेडकर

*सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
Email : aprajapati123@gmail.com
**सहायक आचार्य, शिक्षाशस्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
Email : sarrafedu@gmail.com

स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय पर आधारित समाज की स्थापना के लिए शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में उपयोग करना चाहते थे। इस शोध-पत्र का उद्देश्य आंबेडकर के शैक्षिक विचारों, विशेषकर शिक्षा की प्रक्रिया और प्राथमिक शिक्षा से संबंधित विचारों को प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्दः डॉ. आंबेडकर, शैक्षिक विचार, नैतिकता, उपनिवेश काल।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी का भारत उथल-पुथल और परिवर्तनकारी परिवर्तनों का एक प्रबल क्षेत्र था। इस अवधि के दौरान भारत में बहुत से प्रख्यात व्यक्तित्त्वों का विकास माना जाता है, जो न केवल भारत के वर्तमान अपितु भविष्य को प्रभावित करते थे। 'बाबासाहेब' डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर उनमें स एक थे। आंबेडकर का जीवन साध ारण साधनों के सहारे अपने दम पर शिखर पर पहुँचने वाले नायकों की परिकथा-सा प्रतीत होता है। आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को इंदौर के पास महू नामक छावनी कस्बे में 'महार' जाति में हुआ था जो दलित और निम्न वर्गों से था। यह कस्बा इसी नाम की रियासत की राजधानी हुआ करता था, जिसको आज़ादी के बाद मध्य भारत (वर्तमान का मध्य प्रदेश) में शामिल कर लिया गया था। इन्दौर रियासत में बहुत सारे बाशिंदों की तरह आंबेडकर का परिवार भी महाराष्ट्र से आया था। गौरतलब है कि इस रियासत का राजवंश भी निचली जाति से ही था।[1] आंबेडकर का गाँव अम्बावाडे मराठी रियासत की कोंकण तटीय पट्टी में पड़ता था। लिहाजा आंबेडकर का मूल नाम अंबाबाडेकर भी इसी आधार पर पड़ा था (वर्ष 1900 में उनके एक बाह्मण अध्यापक में उनकी कुशाग्र बुद्धि और व्यक्तिगत गुणों को देखकर उन्हें अपना नाम दे दिया था और इस तरह वह आंबेडकर कहलाने लगे)। महार दूसरे अस्पृश्य समुदायों के मुकाबले ज्यादा साधनहीन थे मगर वे सामाजिक रूप से ज्यादा गतिशील थे। बचपन में ही आंबेडकर का सामना अस्पृश्यता रूपी कलंक से हुआ। आंबेडकर के बाल मन पर इन बातों का बहुत प्रभाव पड़ा कि आखिर कोई नाई इनका बाल क्यों नहीं बनाना चाहता है? आखिर क्यों कोई गाड़ीवान उनको अपनी गाड़ी से ले जाने के लिए तैयार नहीं है? क्यों उन्हें किसी भी कुएं से पानी पीने को नहीं मिल रहा है? डॉ. आंबेडकर का उदय उस अपमानजनक सामाजिक व्यवस्था में होता है, जहाँ मनुष्य असमानता और मानसिक जकड़न की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।

बचपन से ही मेधावी आंबेडकर की प्राथमिक शिक्षा महू छावनी के प्राथमिक विद्यालय से हुई। बाद में उनके पिता मुंबई आ गए तो उन्होंने एलफिंस्टन कॉलेज से मैट्रिक

की परीक्षा वर्ष 1907 में पस की। तत्पश्चात् आंबेडकर ने न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की और फिर वर्ष 1916 में वे लंदन के लिए रवाना हो गए, जहाँ उन्हें कानून की पढ़ाई के लिए ग्रेज इन में दाखिला मिल गया। उन्हें टस्केजी इंस्टिट्यूट के संस्थापक बुकर टी वाशिंगटन से भी भारी प्रेरणा मिली जो अफ्रीकी अमेरिकियों की मुक्ति के लिए शिक्षा को एक सशक्त माध्यम के रूप में देखते थे।[2] डॉ. आंबेडकर के विचारों पर गौतम बुद्ध, संत कबीर और ज्योतिबा फुले का प्रभाव स्पष्ट रूप से था और उन्होंने 28 अक्तूबर, 1954 को मुंबई में कहा, ''मेरा जीवन तीन गुरुओं और तीन उपास्य दैवतों से बना है। मेरे पहले और श्रेष्ठ गुरु बुद्ध हैं। मेरे दूसर गुरु कबीर हैं और तीसरे गुरु ज्योतिबाफुले हैं... मेरे तीन उपास्य दैवता भी हैं। मेरा पहला दैवत 'विद्या', दूसरा दैवत 'स्वाभिमान' और तीसरा दैवत 'शील' (नैतिकता) है।'' महात्मा बुद्ध ने उन्हें मानसिक शांति और समता का संदेश दिया। कबीर ने उन्हें भक्ति मार्ग दिखाया तो ज्योतिबा फुले से उन्हें संघर्ष की प्रेरणा मिली। इन्हीं लोगों के आदर्शों पर चलकर उन्होंने 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर में अपने 3.65 लाख समर्थकों के साथ हिंदू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया था। इस घटना को इतिहास में धम्म प्रवर्तन की सबसे बड़ी घटना के तौर पर याद किया जाता है। आंबेडकर ने अपने विचारों को जन तक पहुँचाने के लिए मूकनायक (1920), बहिष्कृत भारत (1924), समता (1928), जनता (1930), आमी शासनकर्ती जमात बनणार (1940), प्रबुद्ध भारत (1956) नाम से पत्रिकाएँ एवं एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, बुद्ध और कार्ल मार्क्स, द अनटचेबलः हू आर दे एंड व्हाय दे हैव बिकम अनटचेबल्स, बुद्ध एंड हिज़ धम्म और द राइज एंड फॉल ऑफ हिंदू वुमेन आदि पुस्तकें प्रकाशित कीं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव आंबेडकर की भूमिका प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में महत्त्वपूर्ण रही है।

आंबेडकर को एक दार्शनिक, देशभक्त, विद्वान, लेखक, संविधान निर्माता, सामाजिक क्रांतिकारी और मानवतावादी विचारक के रूप में वर्णित किया गया है। आंबेडकर का जीवन और मिशन स्वयं इस बात का साक्षी है कि शिक्षा किस प्रकार एक नेता और दलित वर्गों की नियति को आकार दे सकती है, जिनका वे स्वयं प्रतिनिधित्व करते थे। आंबेडकर निर्विवाद रूप से समूचे भारत में प्रभाव रखने वाले पहले अस्पृश्य नेता थे। इसके बावजूद वर्ष 2000 में उपेन्द्र बक्शी को लिखना पड़ा कि आंबेडकर सिरे से विस्मृत व्यक्तित्त्व हैं।[3] इस उपेक्षा का सबसे स्पष्ट संकेत यह है कि वर्ष 1990 के दशक तक उन पर केन्द्रित किताबें गिनती भर की थी। यद्यपि कि आंबेडकर ने अपनी रचनाओं में विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक समस्याओं पर खूब लिखा है। इस संदर्भ में शिक्षा के

क्षेत्र में आंबेडकर द्वारा किए गए योगदान, उनकी शिक्षा के संदर्भ में विचार और वर्तमान परिदृश्य में उनके शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना महत्त्वपूर्ण है।

आंबेडकर के शिक्षा पर विचार

शिक्षा का मानव समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यह मानव मस्तिष्क को सोचने और सही निर्णय लेने के लिए प्रशिक्षित करती है। दूसरे शब्दों में, शिक्षित होने पर मनुष्य तर्कसंगत हो जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही जानकारी और ज्ञान प्राप्त होता है जिससे व्यक्ति वैश्विक बनता है। अशिक्षित व्यक्ति पढ़-लिख नहीं सकते और एक पक्ष से ज्ञान प्राप्त करने के लगभग सारे साधन उनके लिए बंद हैं परन्तु इसके ठीक विपरीत, एक शिक्षित व्यक्ति एक ऐसे कमरे में रहता है जिसकी सभी खिड़कियाँ बाहरी दुनिया की ओर खुली होती हैं। आंबेडकर का कहना था कि शिक्षा का तात्पर्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं होना चाहिए अपितु इसका मुख्य उद्देश्य एक स्वतंत्र मस्तिष्क और स्वतंत्र सोच का निर्माण होना चाहिए। आंबेडकर अमेरिकन दार्शनिक और अपने शिक्षक जॉन डीवी के विचार, शिक्षा विश्व को समझने हेतु एक सशक्त साधन है और कोई भी लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि जनता को उनकी सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए शिक्षित नहीं किया जाता[4], से बहुत प्रभावित थे। जॉन डीवी से प्रेरित आंबेडकर ने जनता का शैक्षिक उत्थान कैसे हो? इस समस्या को एक प्रयोजनवादी व्यक्ति के रूप में देखा। डीवी के विचारों ने आंबेडकर को समाज, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था और इतिहास से संबंधित समस्याओं के व्यवस्थित विश्लेषण के लिए आधार प्रदान किया। शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए आंबेडकर कहते हैं कि रोटी, कपड़ा और मकान के साथ शिक्षा भी व्यक्ति की बुनियादी जरूरतों में से एक है और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के पास शिक्षा होना चाहिए।[5] उनका मानना था कि शिक्षा एक ऐसी चीज है जो हर व्यक्ति की पहुँच में होना चाहिए।[6] शिक्षा को आंबेडकर डीवी के प्रयोजनवाद और बुद्ध के 'धम्म' का मिश्रण विचित्र मिश्रण मानते हैं।[7] आंबेडकर एक ऐसी शिक्षा की कल्पना करते हैं जो व्यक्ति के मस्तिष्क को तो प्रशिक्षित करे जिससे व्यक्ति बदलते हुए समाज की जरूरतों के अनुसार अपने को अनुकूलित करे तथा साथ ही शिक्षा व्यक्ति के चरित्र को भी विकसित करे। उनका मानना था कि शिक्षा यदि व्यक्ति के चरित्र का निर्माण नहीं करती तो वह अर्थहीन है। शिक्षा को व्यक्ति के विकास के साथ ही साथ आंबेडकर शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का

एक सशक्त माध्यम मानते हैं। आंबेडकर लिखते हैं कि यह शिक्षा ही है जो सामाजिक परिवर्तन और सशक्तीकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है जिससे सामाजिक-आर्थिक असमानता, जाति-आधारित भेदभाव और उत्पीड़न की बेड़ियों को तोड़ा जा सकता है। आंबेडकर का मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों को महत्त्वपूर्ण सोच, कौशल, उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता और उनके अधिकारों के लिए लड़ने का साहस विकसित करने में मदद कर सकती है। नागपुर में 29 जुलाई, 1942 को आंबेडकर ने जीवन के पाँच सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए कहा, ''शिक्षित बनो, आंदोलन करो, संगठित रहो, आत्मविश्वासी बनो, कभी भी हार मत मानो।''

आंबेडकर ने सामाजिक प्रगति की अवधारणा, न्यायपूर्ण एवं समान समाज की अपनी परिकल्पना में शिक्षा को एक क्रांतिकारी उपकरण माना और इस जातिगत असमानता और पितृसत्ता की दमनकारी संरचनाओं से मुक्ति के एक प्रमुख साधन के रूप में पहचाना। शिक्षा को परिभाषित करते हुए आंबेडकर लिखते हैं कि शिक्षा सामाजिक दासता को काटने का सही हथियार है, यह शिक्षा ही है जो कमजोर और निराश लोगों को आलोकित करके उनको सामाजिक स्थिति, आर्थिक उन्नति और राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करेगी। बाबासाहब ने अपने भाषणों में पुस्तकों व लेखों में यह स्वीकार किया है कि शिक्षा व्यक्ति का बौद्धिक विकास करती है, इस कारण उन्होंने शिक्षा की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से व उसके उद्देश्यों की व्यापक चर्चा भी की है। आंबेडकर ने शिक्षा के दो उद्देश्यों की पहचान की—पहला है, 'दूसरों को लाभान्वित करने हेतु शिक्षा का अर्जन' और 'अपने स्वयं के लाभ के लिए शिक्षा का अर्जन'।[8] उनके अनुसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य समाज का विकास होना चाहिए और दूसरा उद्देश्य व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं तथा विशेषताओं का विकास करना होना चाहिए।

आंबेडकर ने कभी भी प्राचीन हिन्दू ज्ञान प्रणाली को एक समावेशी शैक्षिक प्रणाली के रूप में स्वीकार नहीं किया।[9] उनका मानना था कि प्रचलित हिन्दू ज्ञान प्रणाली ने भारतीय बुद्धिमत्ता को न सिर्फ बड़ी चोट पहुँचाई है, अपितु तत्कालीन सभी सामाजिक बुराइयों हेतु भी यही प्रणाली जिम्मेदार थी और केवल इसी कारण तत्कालीन भारत कभी भी एक समावेशी सभ्यता का निर्माण नहीं कर सका।[10] आंबेडकर का कहना था कि वह शिक्षा जो हमें न तो सक्षम बनाती है और न ही समानता और नैतिकता का पाठ पढ़ाती है, वह शिक्षा नहीं है। उनका विश्वास था कि शिक्षा ही व्यक्ति में यह समझ विकसित करती है कि व्यक्ति अन्य से अलग नहीं है, उसके भी औरों की ही तरह समान अधिकार हैं। आंबेडकर का विश्वास था कि शिक्षा ही व्यक्ति को अंधविश्वास, झूठ और आडम्बर

से दूर करती है अतः शिक्षा का उद्देश्य लोगों में नैतिकता व जनकल्याण की भावना विकसित करने का होना चाहिए। शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो ज्ञान के विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण में भी योगदान दे सके।

आंबेडकर का इस पर विश्वास था कि शिक्षा एक जन्मसिद्ध अधिकार है और यह अनिवार्य और सुलभ होनी चाहिए। उन्होंने दलितों और महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। आंबेडकर द्वारा स्थापित समाचार-पत्र बहिष्कृत भारत के 3 फरवरी, 1928 संस्करण में उन्होंने लिखा, ''ज्ञान और शिक्षा केवल पुरुषों के लिए नहीं है; वे महिलाओं के लिए भी आवश्यक हैं... यदि आप भावी पीढ़ियों के लिए सुधार चाहते हैं, तो लड़कियों को शिक्षित करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।'' बाबासाहेब महिला शिक्षा के अग्रणी समर्थकों में से एक थे। 20 जुलाई 1942 को नागपुर में अपने भाषण में, आंबेडकर ने कहा, ''मैं किसी समुदाय की प्रगति उस समुदाय की महिलाओं की प्रगति के आधार पर मापता हूँ। इस प्रकार आंबेडकर महिला शिक्षा के हिमायती थे।

आंबेडकर का मानना था कि प्राथमिक शिक्षा कमजोर वर्गों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने के लिए आवश्यक आधार प्रदान करती है। आंबेडकर ने भविष्य को आकार देने में शिक्षा के महत्त्व को पहचाना और वंचितों को कोई भी अवसर न खोने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा, ''हम भौतिक लाभ छोड़ सकते हैं, लेकिन हम शिक्षा के उच्चतम लाभों को पूरी तरह से प्राप्त करने के अपने अधिकारों और अवसरों को नहीं छोड़ सकते।'' बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के कानून पर 28 फरवरी, 1920 को अपने अखबार 'मूकनायक' में एक लेख लिखा। इस लेख में आंबेडकर ने कानून के संदर्भ में ब्रिटिश और भारतीय नेतृत्व द्वारा निभाई गई भूमिका के बीच अंतर्विरोधों की सीधे तौर पर आलोचना की। डॉ. आंबेडकर ने इस लेख में इस बात पर जोर दिया कि न केवल लड़कों को बल्कि लड़कियों को भी अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए। आंबेडकर प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य करने और सभी के लिए एक समान नीति बनाने के पक्ष में थे पर वे इस मुफ्त बनाने के हिमायती नहीं थे। उन्होंने लिखा कि जो समाज के जो लोग फीस दे सकते हैं, उनसे फीस लेनी चाहिए परन्तु जा लोग फीस नहीं दे सकते, उन्हें इससे छूट मिलनी चाहिए।[11] आंबेडकर का मानना था कि प्राथमिक शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय बढ़ाया जाना चाहिए और इसे मातृभाषा में ही होना चाहिए अन्यथा शिक्षा मूल्यहीन और अर्थहीन हो जाएगी।[12]

निष्कर्ष

डॉ. आंबेडकर ने जिस शिक्षा की वकालत की थी, वह केवल दलित वर्ग या निम्नवर्गीय समुदाय तक ही सीमित नहीं थी, अपितु यह संपूर्ण भारतीय समाज के लिए मूल्यवान है। बीते काल की परिस्थितियों में जिस तरह से समाज के एक उच्च वर्ग ने दलितों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों और जनजातियों को शिक्षा जैसे संसाधन से दूर रखा, उस स्थिति का विश्लेषण करने के लिए आंबेडकर के विचारों का अध्ययन बहुत आवश्यक है। आंबेडकर ने न केवल हाशिये पर पड़े लोगों के सर्वांगीण विकास की बात की बल्कि उन्होंने सभी व्यक्तियों के समग्र विकास हेतु शिक्षा की आवश्यकता बतायी। आंबेडकर एक दूरदर्शी व्यक्ति थे और उन्होंने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों यथा महिलाओं की शिक्षा, उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिए। आंबेडकर ने सामाजिक मुक्ति के लिए पंथनिरपेक्ष शिक्षा पर जोर दिया। उनके शिक्षा दर्शन का मूल विषय है– समाज के प्रत्येक वर्गों के लड़कों और लड़कियों के बीच स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और नैतिक चरित्र के मूल्यों को विकसित करना। तथ्य यही है कि शिक्षा पर आंबेडकर के विचारों को उनके निधन के पाँच दशक से भी अधिक समय बाद असर दिखा। वर्ष 2010 में मुफ्त एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार-2009 अधिनियम में प्रमुखता से प्रतिबिंबित किया गया। यह उनके दूरदर्शी और प्रगतिशीलन विचारों का पर्याप्त प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. ज्ञाफलो, क्रिस्तोफ, भीमराव आंबेडकर एक जीवनी जाति उन्मूलन का संघर्ष एवं विश्लेषण, नई दिल्ली : राजकमल, 2019, पृष्ठ संख्या 14
2. ई. जीलीयट, फ्रॉम अनटचेबल टू दलित, एस्से ऑन आंबेडकर मूवमेंट, दिल्ली : मनोहर, 1992, पृष्ठ संख्या 80
3. बक्शी, उपेंद्र, इमंशीपेशन एज जस्टिसः लीगेसी एंड विज़न ऑफ डॉ. आंबेडकर इन के सी याद (एड), फ्रॉम पेरीफेरी टू सेंटर स्टेज : आंबेडकर, अम्बेद्करियन एंड दलित फ्यूचर, दिल्ली : मनोहर, 2000, पृष्ठ संख 49.
4. डीवी, जान, डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन इन इंट्रोडक्शन टू द फिलोसफी ऑफ एजुकेशन, न्यूयार्कः द मेकमिलन कम्पनी, पृष्ठ संख्या 36
5. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : राइटिंग एंड स्पीचेस, वॉल्यूम-1, डॉ. आंबेडकर फाउंडेशनः नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 94
6. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरः राइटिंग एंड स्पीचेस, वॉल्यूम-2, डॉ. आंबेडकर फाउंडेशनः नई

दिल्ली, पृष्ठ संख्या 64
7. कुमार, संतोष, डॉ. बी.आर. आंबेडकर आइडियाज ऑन एजुकेशनः अ क्वेस्ट फॉर सोशल जस्टिस इन इंडिया, आवर हेरिटेज वॉल्यूम 67 संख्या 4, 2019
8. सी. सोवरभा, बाबासाहेब आंबेडकर, शिक्षा एवं समाज (ePGP), 2017 https://www.youtube.com/watch?v=ad84NMihP Y
9. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : राइटिंग एंड स्पीचज, वॉल्यूम-3, डॉ. आंबेडकर फाउंडेशन : नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 371
10. मंडल, बंकिम चन्द्र, एन ओवरव्यू ऑफ डॉ. बी.आर. आंबेडकर आइडियाज ऑफ एजुकेशन एन्ड इट्स रेलेवेंस इन द प्रेजेंट इंडियन सिनेरियो, मंथली बुलटिन, 2023
11. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरः राइटिंग एंड स्पीचेस, वॉल्यूम-3, डॉ. आंबेडकर फाउंडेशनः नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 56-57
12. राजहंस, शामशंकर सदासाहिब. अ स्टडी ऑफ एजुकेशनल थॅटस एंड वर्क ऑफ डॉ. बी.आर. आंबेडकर, 1995 शोध प्रबंध, पृष्ठ संख्या 654